RNI DELPRA / 2015 / 59918 ISSN 24545252 णमो जिणाणं Year 6 Vol.12 July-Dec 2020 Page 1

# पागद – भासा PÃGADA BHÃSA

प्राकृत भाषा पाउअ-भासा पाइय-भासा PRAKRIT LANGUAGE

*The First News Magazine In Ancient Prakrit Language* *Hon.Editor Prof. Dr Anekant Kumar Jain*

## ऑणलाइण-फेसबुक-लाइव पागद-वक्खाणमाला

सुयपंयमी-सुहावसरम्मि पागद-भासाए तहा य प्राकृतटाइम्ससमायारपत्तस्स संजुत्ततच्चावझाणम्मि ऑणलाइण-फेसबुक-लाइव पागद-वक्खाणमालाअ आयोजणं हवीअ । Prakrit Language इइ फेसबुकपेजेण पागद-वक्खाणमालाअ पसारणं हवीअ । सम्पुण्ण कज्जकमस्स संयोजणं प्राकृतटाइम्स-समायारपत्तस्स संवादगो डॉ.अरिहंत-जइणो ,निद्देसणं पागद-भासा-समायारपत्तस्स संवादगो प्रो.अणेयंतजइणो णवदिल्ली, मग्गदंसणं प्रो.फूलचंदजइणो वाराणसी,मिडिया संयोजणं डॉ. इंदु-जइणो करिओ ।

| वक्खाणं | दिणंकं | मुक्खवत्ता | विसयो |
|---|---|---|---|
| 1.पढमं | 13/05/2020 | प्रो.फूलचंद जइणो पेमी ,वाराणसी | प्राकृत भाषा का वैभव |
| 2.बिअं | 15/05/2020 | प्रो.पेमसुमण जइणो,उययउरो | प्राकृत कथा साहित्य का महत्त्व |
| 3.तइअं | 17/05/2020 | प्रो.कमलचंद-सोगाणी, जयउरो | प्राकृत अध्ययन की आवश्यकता |
| 4.चउत्थं | 19/05/2020 | डॉ.हुउमचंद-भारिल्लो ,जयउरो | प्राकृत परमागम में अध्यात्म एवम् दर्शन |
| 5.पंचमं | 20/05/2020 | प्रो.रायारामजइणो, णोयडा | प्राकृत और अपभ्रंश की पांडुलिपि का संपादन |
| 6.छट्ठं | 21/05/2020 | प्रो.अणेयंतकुमार-जइणो, णवदिल्ली | प्राकृत भाषा और मीडिया |
| 7.सत्तमं | 22/05/2020 | प्रो. जितेंदसाह,अहमदाबाद | अर्धमागधी आगम साहित्य |
| 8.अट्ठमं | 23/05/2020 | प्रो. हम्पाणागरजैय्या ,बंगलोर | कन्नड में प्राकृत साहित्य |
| 9.णवमं | 24/05/2020 | प्रो. धम्मचंद जइणो, जयउरो | अर्धमागधी मूल सूत्र एवम् प्रकीर्णक साहित्य |
| 10.दहमं | 25/05/2020 | डॉ.रमेसचंद जइणो,णवदिल्ली | अपभ्रंश भाषा और साहित्य का वैभव |
| 11.एगारहं | 26/05/2020 | प्रो. जययरामभट्टायरियो,संतिणिकेतणं | प्राकृत भाषा और व्याकरण की परंपरा |
| 12.समावणं | 27/05/2020 | मुणि-सिरी-पणम्मसायरमहारायो (मंगल-पवयणं) | श्रुतपंचमी प्राकृत दिवस और हमारे कर्त्तव्य |

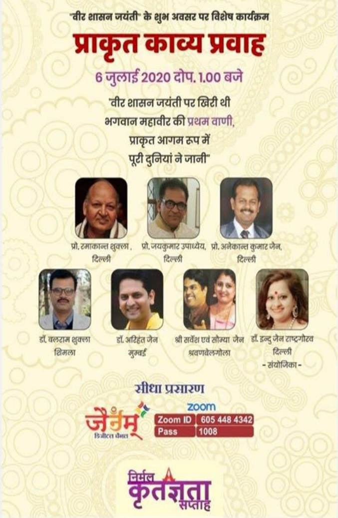


## पागद-कव्व-पवाहो

वीरसासणस्स जयंती-सुहावसरम्मि ऑणलाइणेण जेणं-ज़ूम-चेलणेण ०६/०७/२०२० दिणंकम्मि 'पागद-कव्व-पवाहो' इइ कज्जकमो हवीअ । आयरिय रमाकांतो , आयरिय जयकुमारो,आयरिय अणेयंतो, आयरिय बलरामो,डॉ.अरिहंतो तहा य सव्वे सोहणं पाइयकव्वं पत्थुदं कडं । कुसल-संचलणं डॉ.इंदु जइणो कडं । -Dr Indu Jain

## पागद परिचच्चाए सुहारंभं

पागदभासाए विकासस्स संवद्धणस्स य पागदमंडलसंठानेहिं 29,30 जूण 2020 दिवसम्मि पागद–परिचच्चा–कज्जकमस्स आनलाइण सहलं आयोजणं हवीअ। पत्तपत्तिका–संचालको नरेसकुमार–कासलीवालानुसारेण णातं हवीअ। कज्जकमस्स पहारी सेलेंदो कुमारो जेणो कहिओ, यं इमम्मि कज्जकमम्मि सामी देवेंदकित्तिए जेणमठस्स हुम्मचस्स कण्णाडयस्स अज्झक्खताए देसस्स अणेयभागेहिं 30 सेठा विदुमा उवट्ठिया हवीअ। जम्मि अलीगढेण आयरियो सच्चपयास सर्मणो, बेंगलोरेण आयारियो हंपा नायरायय्या, नागपुरेण आयारियो भागचंद जेणो, उदयपुरेण आयरियो पेम्मसुमणजेणो, आयरियो जिनेंदजेणो, देयलीए आयरियो गयाचरणतिपाठी महासयो, आयरियो जयकुमारो उवज्झाए, आयारियो अणेकंतकुमारजेणो, आयारिया कप्पणाजेणा, विज्जावारिहि धम्मेंदजेणो, वाराणसीए आयरियो फुल्लचंदजेणो, नोएडाए आयारियो राजारामजेणो, बुरहानपुरेण सहाय–आयारियो सुरेंदकुमारजेणो, जयउरेण आयरियो सुसमा सिंघवी महासया, आयरियो धम्मचंदजेणो, आयरियो सिरियांसकुमारसिंघई महासयो, आयारियो कमलेसकुमारजेणो, विज्जावारिहि सयेंदकुमारजेणो, विज्जावारिहि दंसणाजेणा, अहमदाबादेण सहायो आयरियो बालाजीगणोरकरो, पच्चिमबंगालेण आयरियो जगतरामभट्टाचाज्जो, कुरुखेत्तेण आयारियो धम्मचंदजेणो, वेसालीए आयरियो रिसहचंदजेणो, मेसूरेण सहायो आयरियो तेयरायसिंघवी महासयो, सोलाउरेण आयरियो महावीर सत्थी महासया उवट्ठियो संति। विदुमपरिसदस्स महामंत्री विज्जावारिही सुरेंदकुमारजेणो, बुरहाणपुरो, कज्जकमम्मि आगयम्मि परामस्से जहासंभव पारब्धं कत्तुं चच्चा कथिओ।

एआइं विदुमा पागदभासाए विकासस्स संवद्धणस्स समाजा विदुमा य अग्गे अगन्तूण कहिओ। विदुमा पागदस्स विकासाय पागदपाठसालाणं पारब्धं कत्तुं, पागदस्स युवाविदुमा अग्गे नीयत्थं सम्माणं वितरणं, पागद संठाणस्स ठावणाए विसयम्मि वियारं दत्तो। कज्जकमस्स अज्झक्खो सामी देवेंदकित्ती पागदभासाए विकासाय सघरेण पारब्धं कत्तुं कहिओ। कज्जकमस्स निद्देसिया विज्जावारिही दंसणाजेणा, तहा संयोजयो विज्जावारिही सयेंदकुमारजेणो, केद्दिय सक्कय–विस्सविज्जालयं जयउरं कज्जकमस्स सहलं आयोजणं हद्दिकं वद्धापणं दत्तो। Dr Satyendra Jain,Jaipur

## ।। Editorial ।।

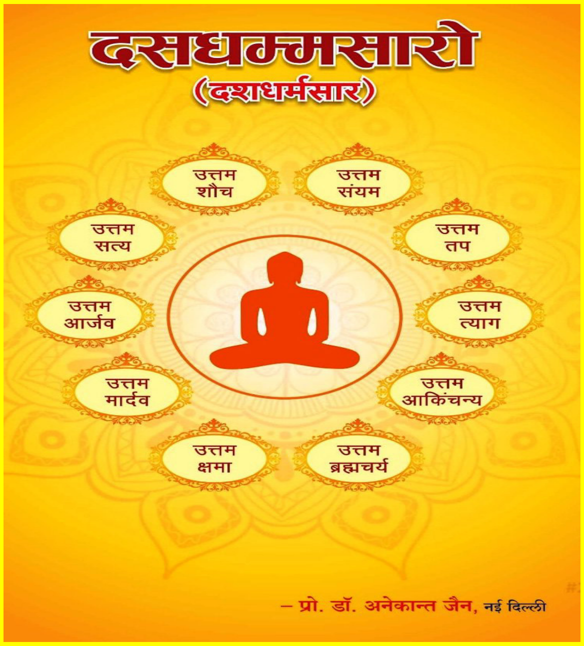


# दसधम्मसारो

**प्रो डॉ.अनेकांत कुमार जैन**

### मंगलाचरण

### (गाहा छंद )

**णमो हु सव्वजिणाणं आयरियोवज्झायसाहूणं य ।**
**णमो य पज्जुसणाणं णमो दसलक्खणपव्वाणं ।।**

सभी जिनेन्द्र भगवंतों को मेरा नमस्कार ,सभी आचार्यों,उपाध्यायों और साधुओं को मेरा नमस्कार,पर्युषण को नमस्कार और दसलक्षण पर्वों को नमस्कार ।।१।।

### (उग्गाहा छंद)

### धम्मसरूवं

**दंसणमूलो धम्मो वत्थुसहावो खलु जीवरक्खणं ।**
**चारित्तं सुदं दया धम्मो य सुद्धवीयरायभावो ।।**

दर्शन का मूल धर्म है ,वस्तु का स्वभाव धर्म है ,जीवों की रक्षा ही धर्म है ,चारित्र धर्म है ,श्रुत धर्म है ,दया धर्म है और विशुद्ध वीतरागभाव धर्म है –ऐसा जानो ।।२।।

### धम्मस्स दसलक्खणं

**धम्मस्स दसलक्खणं खमा मद्दवज्जवसउयसच्चा य ।**
**संजमतवचागाकिंयण्हं बंभं य जिणेहिं उत्तं ।। ३ ।।**

जिनेन्द्र भगवान् ने धर्म के दस लक्षण कहे हैं – उत्तम क्षमा , उत्तम मार्दव , उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य ।

### उत्तमखमा

**खमा हु अप्पसहावो कोहाभावे य जायइ अप्पम्मि ।**

**मिच्छत्तस्साभावे जहा य सम्मत्तं हवइ अप्पम्मि ।।**

क्षमा आत्मा का स्वभाव है , वह क्रोध कषाय के अभाव स्वरूप आत्मा में उत्पन्न होती है जैसे मिथ्यात्व के अभाव में सम्यक्त्व आत्मा में प्रगट होता है ।।४।।

### उत्तममज्जवं

**मज्जवप्पसहावो य माणाभावे य जायइ अप्पम्मि।**

**मिच्छत्तस्साभावे जहा य सम्मत्तं हवइ अप्पम्मि ।।**

मार्दव आत्मा का स्वभाव है , वह मान कषाय के अभाव स्वरूप आत्मा में उत्पन्न होता है जैसे मिथ्यात्व के अभाव में सम्यक्त्व आत्मा में प्रगट होता है ।।५।।

### उत्तमज्जवं

**अज्जवप्पसहावो य मायाभावे य जायइ अप्पम्मि ।**

**मिच्छत्तस्साभावे जहा य सम्मत्तं हवइ अप्पम्मि ।।**

आर्जव आत्मा का स्वभाव है , वह माया कषाय के अभाव स्वरूप आत्मा में उत्पन्न होता है जैसे मिथ्यात्व के अभाव में सम्यक्त्व आत्मा में प्रगट होता है ।।६।।

### उत्तम-सउचं

**सउचं अप्पसहावो लोहाभावे य जायइ अप्पम्मि ।**

**मिच्छत्तस्साभावे जहा य सम्मत्तं हवइ अप्पम्मि ।।**

शौच आत्मा का स्वभाव है , वह लोभ कषाय के अभाव स्वरूप आत्मा में उत्पन्न होता है

जैसे मिथ्यात्व के अभाव में सम्यक्त्व आत्मा में प्रगट होता है ।।७।।

## उत्तम-सच्चं

**सच्चधम्मे य सच्चे वयणे अत्थि भेओ जिणधम्मम्मि ।**
**पढमो वत्थुसहावो दुवे अत्थि महव्वयं साहूणं ।।**

जिन धर्म में उत्तम सत्य धर्म और सत्य वचन में भेद है । एक (उत्तम सत्य धर्म)तो वस्तु का स्वभाव है और दूसरा (सत्य वचन) मुनियों का महाव्रत है ।।८।।

## उत्तम-संजमो

**संजमणमेव संजम जो सो खलु हवइ समत्ताणुभाइ ।**
**णियाणुभवणिच्छयेण ववहारेण पचेंदियणिरोहो ।।**

संयमन ही संयम है जो निश्चित ही सम्यक्त्व का अनुभावी होता है । निश्चयनय से निजानुभव और व्यवहार से पंचेन्द्रिय निरोध संयम कहलाता है ।।९।।

## उत्तम-तवो

**इच्छाणिरोहो तवो कम्मखवट्ठं सगरूपायरणं ।**
**णियबहितवो भेयेण तेसु झाणं परमतवोद्दिट्ठं ।।**

इच्छा का निरोध तप है , कर्म क्षय के लिए अपने स्वरूप में रमण करना तप है ।तप छह अन्तरंग और छह बहिरंग के भेद से बारह प्रकार का होता है उनमें भी ध्यान को परम तप कहा गया है ।।१०।।

## उत्तम-चागं

**सगवत्थुणं य दाणं चागपरदव्वेसु रागाभावो ।**
**णाणचागो ण होदि य भेयणाणं अत्थि पच्चक्खाणं ।।**

स्व वस्तुओं का दान होता है और पर वस्तुओं में रागद्वेष का अभाव त्याग है । निश्चित ही ज्ञान का त्याग नहीं होता है (जबकि दान होता है ) और वास्तव में पर द्रव्यों से भेदज्ञान होना ही प्रत्याख्यान(त्याग) है ।।११।।

## उत्तम-आकिंयण्हं

**परकिंचिवि मज्झ णत्थि भावणाकिंयण्हं गणहरेहिं ।**
**अंतबहिगंथचागो अणासत्तो हवइ अप्पासयेण ।।**

पर पदार्थ कुछ भी मेरा नहीं है ऐसी भावना ही उत्तम आकिंचन्य धर्म है –ऐसा गणधरों के द्वारा कहा गया है ।अन्तरंग और बहिरंग परिग्रहों का त्याग और उनके प्रति अनासक्ति आत्मा के आश्रय से उत्पन्न होती है ।।१२।।

## उत्तम-बंभचय्यं

**बंभणि चरणं बंभं जीवो विमुक्कपरदेहतितित्तिस्स ।**
**विवरीयलिंगेसु खलु आसत्ति कारणं य भवदुक्खस्स ।।**

जीव का परदेह की सेवा से रहित होकर अपनी शुद्ध आत्मा में रमण करना ब्रह्मचर्य है ।निश्चित रूप से विपरीत लिंग में आसक्ति ही भव दुःख का मूलकारण है ।।१३।।

## खमा-पव्वं

**जीवखमयंति सव्वं खमादिणे च जायंति सव्वाओ।**
**'मिच्छा मे दुक्कडं ' य बोल्लंति वेरमज्झं ण केण वि ।।**

क्षमा दिवस पर जीव सभी जीवों को क्षमा करते हैं सबसे (क्षमा) याचना करते हैं ।(वे) कहते हैं- मेरे दुष्कृत्य मिथ्या हों तथा मेरा किसी से भी बैर नहीं है ।।१४।।

## अभिधम्मसारो

**धारइ जो दसधम्मो पंचमयाले णियसत्तिरूवेण ।**
**सो अणिंदियाणंदं लहइ 'अणेयंत' सरूवं अप्पं ।।**

इस विषम पंचम काल में भी जो इन दस धर्मों को यथा शक्ति धारण करता है ,वह अतीन्द्रित आनंद और 'अनेकांत' स्वरूपी आत्मा को प्राप्त करता है ।।१५।।

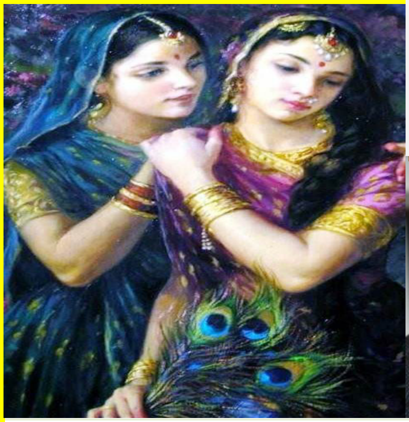

# विसाहिआ

डॉ.बलराम शुक्ल

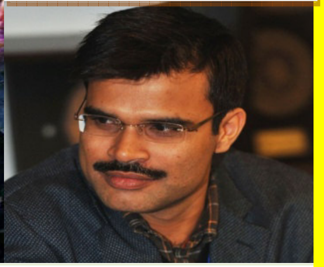

मरिउं व समासण्णा जा आसि खणं पि तइ अदीसन्ते।
पइहरमेइ विसाहा सा, अच्चुअ! जियसु अह मरसु॥१॥

तुम एक क्षण को भी जब नहीं दीखते थे,तब जो मरने को आ जाती थी ,हे अच्युत,वही विशाखा अब पति के घर जा रही है
अब चाहे तुम जिओ या मर जाओ ।

उअ, हिअए वहमाणा केण वि वुब्भइ विसाहिआ कण्ह!।
तुअ पच्छिमपरिसंगे विच्छित्तं रोवणस्सेच्छं॥२॥

वह देखो कृष्ण, कोई ले जा रहा है विशाखा को और विशाखा भी अपने हृदय में लिए जा रही है,अन्तिम बार तुमसे लिपट कर पागलों की तरह रोने की इच्छा।

जद्दिट्ठिरायलक्खो रत्तिदिवं आसि कण्ह! तुं, दाणिं ।
तीए तुए सहियव्वं णिल्लक्खं पेक्खियं होउ॥३॥

रात–दिन जिसकी प्रेम भरी दृष्टि के लक्ष्य बस तुम्हीं थे,
हे कृष्ण अब सहना जब तुम्हारी ओर उसकी लक्ष्यरहित दृष्टि उठेगी ।

तइ रायसुण्णहिअए सुण्णीकाऊण पइहरं चलिआ।
गोट्ठं जउँणाकच्छं सा कण्ह! कुडुंगसोहग्गं॥४॥

तुम्हारा हृदय जब राग से शून्य हो गया, कृष्ण तो विशाखा भी चल दी सूना करके –गोष्ठ, यमुना के किनारों और कुञ्जों के सुहाग को अपने पति के घर ।

वेकुण्ठ! ते न लच्छी हीरइ पायालमेत्थ का तन्ती?।
अण्ण व्व कावि कण्णा गामा गामन्तरं जाइ॥५॥

कृष्ण, तुम्हारी लक्ष्मी का अपहरण करके कोई पाताल तो ले नहीं जा रहा! तुम्हें क्या अन्तर पड़ता है?! बहुत सारी लड़कियों की तरह ही तो है यह (विशाखा) जो इस गाँव से उस गाँव जा रही है!

पडिहरचच्चररच्छं अमियवयेहिं वयस्स सिंचित्ता।
सव्वे अज्ज चयन्ती विसाहिए! हा विसाहिए कुणसि॥६॥

व्रज के हर घर, चौराहे और गली को अपने अमृतवचनों से सींचती थी तुम विशाखे, आज सबको छोड़कर जाती हुई, हाय!
उन्हें विष से भी असह्य बना रही हो ।

## जिणफाउंडेसण अन्तारट्ठिय-जइण-जोग-सम्मेलणं

२१ जूण विस्स-जोग-दिवसावसरस्स पुव्वबेलाए २० जूण २०२० दिणंकम्मि जिणफाउंडेसणम्मि ऑणलाइण-अन्तारट्ठिय-जइण-जोग-सम्मेलणस्स आयोजणं हवीअ । सम्मेलणस्स अज्झक्खो प्रो.फूलचंद जइणो पेमी ,वाराणसी आसी ।मुक्खवत्ता प्रो.पंकज जइणो,USA,प्रो.वीरसायरो जइणो ,दिल्ली तहा प्रो मार्कंडेयणाह तिवारी आसी । संजोयणं रुइ-जइणो कडं ।

**Declaration As Per Rule**

Printed,Published And Owned By Ruchi Jain And Printed At Sonu Printing Press,Munirka,New Delhi-67 And Published At JIN FOUNDATION,A93/7A,Behind Nanda Hospital,Chattarpur Extension,New Delhi-110074,Editor Dr Anekant Kumar Jain,Email - pagadbhasa001@gmail.com, Contact-9711397716

**Printed Matter Posted Under P&T Guide Sec.114(7)**

**To**

……………………………………………………………………

……………………………………………………………………

……………………………………………………………………

If undelivered please return to

**JIN FOUNDATION,A93/7A,Behind Nanda Hospital,Chattarpur extension,New Delhi-110074**